Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कॉविड – 19 के बाद हिंदी उपन्यासों में मानसिक अवसाद, एकांत बोध एवं परिवर्तित सामाजिक संरचनाएं

अनिल कुमार,
शोधार्थी,
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ (राज.)।

सारांश

वैश्विक स्तर पर मानव सभ्यता एवं उसकी संरचनाओं को कॉविड – 19 महामारी ने गहराई से प्रभावित किया। देश में उस समय लागू लॉकडाउन, प्रवासी संकट, सामाजिक दूरी एवं मृत्यु के भय ने व्यक्ति व समाज दोनों को सामाजिक एवं मानसिक दृष्टि से झकझोर कर रख दिया। हिंदी साहित्य की एक प्रमुख विधा, उपन्यास जो कि काल की सामूहिक चेतना को आत्मसात करने का एक संवेदनशील माध्यम है, ने इस ऐतिहासिक अनुभव को विविध रूपों यथा वैचारिक, संवेदनशील, गंभीर एवं सामाजिक अंतर्दृष्टि में अभिव्यक्त किया है। इस महामारी के बाद हिंदी उपन्यासों में मानसिक अवसाद, एकांत, अस्तित्व, प्रवास, पारिवारिक पुनर्समीक्षा, मनोवैज्ञानिक संकट, सामाजिक पुनर्संरचना, आर्थिक उथल – पुथल एवं स्त्री अनुभव जैसे विषयों को केंद्रीय रूप में लेकर समाज के समक्ष प्रस्तुत होते हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इन विषयगत रुझानों का विश्लेषण करना है एवं यह प्रतिपादित करना है कि किस प्रकार इन लेखन में नए मनुष्य की अवधारणा विकसित होती है। शोध पत्र यह भी दिखाता है कि महामारी के नवीनतम, वैचारिक, कलात्मक एवं शिल्पगत आयाम प्रदान किए हैं। शोध में पाठ – विश्लेषण की गुणात्मक पद्धति को अपनाते हुए समकालीन हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय एवं मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि महामारी उपरांत एकांत; आध्यात्मिक अवस्था न रहकर बाधित सामाजिक स्थिति के रूप में उभरता है तथापि मानसिक अवसाद जो कि पूर्व में एक व्यक्तिगत समस्या थी, अब एक सामूहिक अनुभव बन जाता है एवं श्रम, परिवार व प्रवास में भी एक स्थाई परिवर्तन दिखाई देता है।

महामारी के बाद हिंदी उपन्यासों का मनुष्य आत्मासमिक्षी और असुरक्षित एवं बदलती हुई सामाजिक संरचनाओं के मध्य संतुलन खोजने वाला व्यक्तित्व बन जाता है। यह साहित्य समकालीन भारतीय समाज की मानसिक संरचना के रूप में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द : कॉविड – 19, लॉकडाउन, प्रवासी संकट, सामाजिक दूरी, पारिवारिक पुनर्समीक्षा, मनोवैज्ञानिक संकट, मृत्यु का भय, बाहरी शून्यता, मानसिक अवसाद, एकांत बोध एवं परिवर्तित सामाजिक संरचनाएं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

प्रस्तावना

कॉविड – 19 महामारी 21वीं सदी की ऐतिहासिक, सबसे व्यापक एवं प्रभावशाली घटनाओं में से एक है जो कि केवल एक जैविक आपदा ही नहीं थी अपितु सांस्कृतिक संरचनाओं, सामाजिक संबंधों और मानसिक संतुलन की एक व्यापक परीक्षा भी थी। इसने केवल स्वास्थ्य व्यवस्था को ही चुनौती नहीं दी थी बल्कि मानव सभ्यता के आत्मविश्वास को भी हिला कर रख दिया था। देश में मार्च, 2020 में लगे लंबे लॉकडाउन ने मनुष्य को सीमित भौतिक दायरे में बाँधकर जनजीवन की गति को थाम दिया। इससे सामाजिक गतिशीलता बाधित हुई। इस दौरान मनुष्य अपने घरों तक ही सीमित हो गया। घरों में बाधित मनुष्य के आत्मविश्वास को सीमित जीवनचर्या, संक्रमण के भय, मृत्यु की बढ़ती संख्या एवं भविष्य की अनिश्चितता ने गहराई से प्रभावित किया। इस सीमाबद्धता ने न केवल शारीरिक दूरियाँ उत्पन्न की अपितु मानसिक व भावनात्मक दूरियाँ भी बढ़ा दी।

हिंदी उपन्यासों जो कि सामाजिक परिवर्तन का एक संवेदनशील एवं सशक्त साहित्यिक माध्यम है, ने इस परिस्थिति को अपने कथ्य एवं शिल्प में आत्मसात करते हुए ठहराव एवं भय एवं असुरक्षा को गहन मानवीय दृष्टि से अभिव्यक्त किया। महामारी से पूर्व हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श, मध्यवर्गीय संघर्ष, दलित विमर्श आदि जैसे विषयों की प्रमुखता थी किंतु महामारी के बाद साहित्य में एक नई संवेदना उभरकर सामने आती है जिसमें असुरक्षा, एकांत, अवसाद एवं सामाजिक पुनर्संरचना के स्वर प्रबल हो जाते हैं। हिंदी उपन्यासों ने एक गहन मानवतावादी चश्मे के जरिए जनता के मध्य व्याप्त असुरक्षा व भय के साथ जीवन में आए ठहराव को भी समझाया। यह परिवर्तन केवल विषयवस्तु को ही नहीं अपितु कथ्य प्रक्रिया एवं शिल्प विधान में भी दिखाई दिया। हिंदी उपन्यासों का यह एकांत केवल भौतिक अलगाव ही नहीं दर्शाता है अपितु आत्म – निरीक्षण संचार की एक प्रक्रिया के रूप में भी उभरकर सामने आता है। उपन्यासों के पात्र अपने पूर्व के अनुभवों, स्मृतियों एवं पारस्परिक संबंधों की पुनर्मूल्यांकन प्रक्रिया में संलंगन दिखते हैं। कई स्थलों पर तो एकांत को आत्मबोध व आत्म – निरीक्षण हेतु एक माध्यम के रूप में बदल दिया जाता है। व्यक्ति अपने भीतर की असुरक्षा एवं भय से झुजते हुए नवीन जीवन मुल्यों की खोज में संलिप्त दिखता है। महामारी के बाद हिंदी उपन्यासों में मानसिक विघटन, अवसाद व मानसिक उथल – पुथल का स्वर प्रदर्शित होता है। उपन्यासकार पात्रों के मौन, आत्मकथ्य व अंतर्द्व्द के माध्यम से मौजूदा संकट को अभिव्यक्त करते हैं। यहाँ अवसाद व्यक्तिगत न रहकर सामूहिक अनुभव के रूप में सामने आता है। हिंदी उपन्यासों का स्त्री विमर्श महामारी के उपरांत व्याप्त सामाजिक पुनर्संरचना के साथ गहराई से जुड़ता है। यह परिवर्तन सामाजिक संरचना के नवीनतम रूप को संकेतित करता है। महामारी के बाद रचित उपन्यास निराशा के मध्य आशा का स्वर प्रस्तुत करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कॉविड – 19 महामारी के बाद रचे गए हिंदी उपन्यासों में मनुष्य की मानसिक अवस्था किस प्रकार परिवर्तित हुई एवं सामाजिक संरचना में आए परिवर्तनों को किस रूप में अभिव्यक्ति मिली।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

सामग्री एवं विधियों

अध्ययन हेतु सन् 2020 के उपरांत प्रकाशित एवं कॉविड – 19 महामारी प्रभावित संदर्भों को व्यक्त करने वाले हिंदी उपन्यासों को चिन्हित किया गया है। चयन का आधार यह रखा गया है कि संक्रमण में लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, प्रवासी संकट, जनता का एकांत बोध, मानसिक अवसाद एवं परिवर्तित सामाजिक संरचनाओं का उल्लेख किया गया हो और पात्रों की मानसिक स्थिति पर उक्त कारकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आता हो।

शोध की पद्धति गुणात्मक पाठ – विश्लेषण की है। हिंदी उपन्यासों के पात्रों, कथानक, भाषा – शैली एवं प्रतीक – योजना का सूक्ष्मतम अध्ययन करते हुए यह देखना है कि एक महामारी का अनुभव किस प्रकार से साहित्यिक संरचना में रूपांतरित होता है। मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत पात्रों के अकेलेपन एकांत बोध, अस्तित्व संकट, एवम् मानसिक अवसाद का विश्लेषण किया गया है तथापि समाजशास्त्रिय दृष्टिकोण के अंतर्गत श्रम – संरचना, प्रवास, पारिवारिक व आर्थिक संरचनाओं में आए बदलावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का स्वरूप विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक है। कॉविड –19 महामारी संबंधी संस्मारणात्मक और पत्रकारिता आधारित लेख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है किंतु अध्ययन हेतु उपन्यास विधा को चुनने के पीछे का कारण इस विधा में व्याप्त सामाजिक प्रभावों की अपेक्षाकृत कमी है। अध्ययन की सीमा केवल हिंदी उपन्यास विधा तक ही सीमित रखी गई है।

एकांत बोध का नवीन स्वरूप

कॉविड – 19 महामारी के पहले के साहित्य में एकांत का प्रायः आध्यात्मिक अथवा रचनात्मक अनुभव के रूप में ही चित्रण हुआ था किंतु महामारी के उपरांत साहित्य में यह दमनकारी एवं बाध्य अनुभव बन कर हमारे समक्ष उपस्थित होता है। प्रायः मनुष्य के जीवन में उसका घर एक सुरक्षित आश्रय के रूप में होता है किंतु लॉकडाउन के दिनों में वही घर बंद एवं सीमित स्थान के रूप में उभरकर सामने आता है। हिंदी उपन्यासों में घर रूपी जेल के साथ – साथ सुनसान सड़के, बंद बाजार एवं खामोश शहर बार–बार दिखते हैं। पात्रों के आंतरिक खालीपन के प्रतीक रूप में यह बाहरी शून्यता उपन्यास में अभिव्यक्त होती है। समय का बोध बदल जाता है; यथा दिन व रात के बीच का अंतर मिट सा जाता है। उपन्यास के पात्र अपनी पुरानी यादों में लौटते हैं एवं वर्तमान से दूर होने लगते हैं। उनका यह एकांत उन्हें आत्म – मंथन की ओर धकेलता है किंतु साथ ही साथ एक मानसिक दबाव भी पैदा करता है।

मानसिक अवसाद एवं अस्तित्व संकट

महामारी के बाद के उपन्यासों में अभिव्यक्त मानसिक अवसाद का अत्यंत तीव्र स्वर है। आर्थिक सुरक्षा संक्रमण का भय व सामाजिक दूरी ने पात्रों में असुरक्षा एवं अस्थिरता की भावना पैदा करती है। हिंदी उपन्यासों में वर्णित मानसिक अवसाद दुर्बलता के रूप में न आकर सामाजिक परिस्थिति के परिणाम के रूप में प्रस्तुत होता है। हिंदी उपन्यासों के कुछ पात्र भविष्य की अनिश्चितता एवं बेरोजगारी से त्रस्त दिखते हैं। उपन्यासों में प्रवासी मजदूरों की त्रासदी मानवीय पीड़ा का एक व्यापक

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

चित्र प्रस्तुत करती है। मृत लोगों की बढ़ती संख्या पात्रों को जीवन के अर्थ पर पुनः विचार करने को बाध्य कर देती है। समय के साथ मौन एवं आत्म – संवाद की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

पारिवारिक संबंधों की पुनर्परिभाषा

लॉकडाउन के दौरान परिवार के सदस्यों द्वारा एक छत के नीचे बीताए लंबे समय ने पारिवारिक संबंधों की नई परतें खोल दी। इस परिवर्तन का हिंदी उपन्यासों में व्यापक चित्रण मिलता है। हिंदी उपन्यासों में पति–पत्नी के मध्य तनाव, दो पीढियों के बीच व्याप्त संवेदनहीनता एवं घरेलू जिम्मेवारियों के पुनः वितरण संबंधी चित्रण देखने को मिलते है। इस महामारी ने देश की आर्थिक असमानता को स्पष्ट कर दिया। बेरोजगारी का दंश, प्रवासी मजदूरों का पलायन एवं निम्न वर्गीय संघर्ष आदि का उपन्यासों में मार्मिक ढंग से चित्रण किया गया है। इस महामारी के दौरान महिलाओं पर मानसिक दबाव एवं घरेलू श्रम बढ़ा। उपन्यासों में मानवीय करुणा एवं वर्गीय विषमता दोनों को साथ–साथ प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक संरचना

कॉविड – 19 महामारी ने सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को पुनः परिभाषित किया। सीमित स्थान में एक लंबे समय तक इकट्ठे रहने से परिवारों में समीपता तो बढी परंतु साथ ही तनाव भी बढ़ गया। इस दौरान परिवारों में भावनात्मक संतुलन एवं पीढ़ियों के टकराव संबंधी कई प्रसंग सामने आते हैं। समाज में विषमता का प्रसार प्रवासन संबंधी समस्या से बढ़ गया। हिंदी उपन्यासों में चित्रित 1000 – 1000 या 1800 – 1800 किलोमीटर तक छोटे–छोटे बच्चों को साथ पैदल लेकर चलने वाले मजदूरों के दृश्य पाठकों के मन में संवेदनात्मक प्रभाव डालते हैं। ऐसी स्थिति न केवल आर्थिक संकट अपितु मानवीय गरिमा के प्रश्नों को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। लॉकडाउन के दौरान आभासी संवाद, ऑनलाइन शिक्षा एवं सोशल – मीडिया ने सामाजिकता की प्रकृति पूरी तरह बदल दी। हिंदी उपन्यासों में ईमेल, चैट इत्यादि डिजिटल संवाद इस प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। ऐसे डिजिटल संवादों के उपन्यासों में आने से शिल्प – विधान में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई पड़ते है।

परिणाम

कॉविड – 19 महामारी के बाद रचित हिंदी उपन्यासों के पाठ – विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि अवसाद, एकांत एवं सामाजिक संरचनाऐं तीनों परस्पर संबंधित आयाम है जो कि एक साथ मिलकर एक नए मनुष्य की छवि निर्मित करते हैं। सर्वप्रथम एकांत बोध का स्वरूप परिवर्तित होता है। पहले के साहित्य में एकांत का संबंध सृजनाात्मक चिंतन अथवा आध्यात्मिकता से था किंतु महामारी ने इसे बाध्य परिस्थिति के रूप में प्रस्तुत किया। जो घर पहले एक सुरक्षित आशियाना माना जाता था, वही लॉकडाउन के दौरान एक कैदखाने का रूप ले लेता है। जनता इस कैद से मुक्ति हेतु छटपटाने लगती है। खाली बाजार, बंद सड़के, पुलिस वालों के नाके, खिड़कियों से झाकते लोगों के दृश्य आदि बार–बार सामने आती हैं। समय की निरंतरता नहीं रहती एवं दिन व रात का अंतर मिट – सा जाता है। हिंदी उपन्यास के पात्रों के अंतर्मन की रिक्तता बाहरी शून्यता से जुड़ जाती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

दूसरी और उपन्यास में वर्णित मानसिक – अवसाद का चित्रण गहन एवं व्यापक है। कॉविड – 19 से उपजी बेरोजगारी, संक्रमण का भय एवं आर्थिक असुरक्षा पात्रों के आत्मविश्वास को तोड़ देती है। हिंदी उपन्यास मानसिक अवसाद को व्यक्तिगत दुर्बलता के रूप में नहीं, अपितु सामाजिक परिस्थितियों से प्राप्त परिणामों के रूप में भी व्यक्त करते हैं। उपन्यासों में मौन, आत्म – संवाद, मृत्यु – चेतना एवं स्मृतियों की पुनरावृत्ति आदि जैसे तत्व प्रखर हो उठते हैं। पात्र अपने जीवन में आई स्थिरता को तीव्रता से अनुभव करते हैं एवं खुद को अस्तित्व के प्रश्नों में उलझा हुआ पाते हैं।

कॉविड – 19 महामारी से सामाजिक संरचनाओं में भी उल्लेखनीय बदलाव दिखता है। एक लंबे समय तक एक ही छत के नीचे परिवारों के साथ रहने से उनमें निकटता के साथ–साथ तनाव भी बढ़ता है। दो पीढियों के बीच संघर्ष, बात–बात पर असहमति, छोटी–छोटी बातों पर झगड़े एवं भावनात्मक दूरी के प्रसंग उपन्यासों में दिखते हैं। उपन्यासों में प्रवासी मजदूरों की मजबूरन लंबी दूरी तक की गई पैदल – यात्रा मानवीय त्रासदी के प्रतीक रूप में सामने आती है। आभासी संवाद, ऑनलाइन शिक्षा एवं सोशल – मीडिया समाज में बड़े स्तर का बदलाव लेकर आते हैं जिससे उपन्यासों के साथ–साथ अन्य विधाओं में भी शिल्पगत परिवर्तन देखने को मिलते है।

निष्कर्ष

उक्त परिणाम यह दर्शाते हैं कि कॉविड – 19 महामारी के बाद रचित हिंदी उपन्यासों की छवि अधिक असुरक्षित, आत्मविश्लेषणी एवं संवेदनशील हो गई है, यहा सामान्य मनुष्य के भय एवं संघर्ष ने पारंपरिक नायकत्व का स्थान ले लिया है। उपन्यासों के पात्र अपनी कमजोरी एवं सीमाओं को स्वीकारते हुए जीवन का नवीन अर्थ खोजने में प्रयासरत दिखते हैं। मानसिक – अवसाद के स्वर ने हिंदी उपन्यासों को एक नई मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की है। महामारी के अनुभव ने मनुष्य को अपनी अस्थिरता एवं सीमाओं का बोध करवाया है एवं जीवन की अनिश्चितता को सामने ला रख दिया है।

महामारी ने यह तो स्पष्ट कर दिया है कि सामाजिक संरचनाऐं मानवीय स्वास्थ्य से गहरे स्तर पर जुड़ी हुई है। लॉकडाउन के परिणाम स्वरुप परिवर्तित सामाजिक संरचनाओं के संदर्भ में श्रम, तकनीक व परिवार के नए समीकरण प्रस्तुत होते हैं। एक और जहाँ डिजिटल माध्यमों ने लॉकडाउन के दौरान घरों में बंद लोगों के बीच संचार को संभव बनाया तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक दूरियां भी उत्पन्न की।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कॉविड – 19 ने हिंदी उपन्यासों में एक नए प्रकार के मनुष्य की अवधारणा को निर्मित किया है; यह मनुष्य स्वयं को एकांत से जुड़ा हुआ पाता है, मानसिक अवसाद का सामना करता दिखता है एवं परिवर्तित सामाजिक संरचनाओं में अपनी पहचान की खोज में प्रयासरत रहता है। यह रचनाएँ केवल संकट के दस्तावेज रूप ही नहीं अपितु मानवीय जिजीविषा का प्रमाण भी प्रस्तुत करते है। कॉविड – 19 महामारी का यह अनुभव हिंदी उपन्यासों में सामाजिक आत्मचिंतन, मानवीय – संवेदना एवं सांस्कृतिक पुनर्समीक्षा की दीर्घकालिक प्रक्रिया को रेखांकित करता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:4(2), April 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

संदर्भ :–

1. मृदुला सिन्हा, कॉविड – 19 जिंदगी 50–50, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. यादराम यादव, कॉविड – 19 एक अदृशय शत्रु, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, 2021
3. संगीता पांडेय, क्षितिज के उस पर च्ंदकमउपब 2019–2020,राजमंगल प्रकाशन,उतर प्रदेश, 2024